thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 8 9 से 15 अप्रैल, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 वै. कृ.-15

आर्य गौरव व दलित मित्र जैसे सम्मान से पुरस्कृत

श्री संभा जी राव पवार की संन्यास दीक्षा में उमड़ा महाराष्ट्र के आर्यों का सैलाब

संभा जी राव पवार संन्यास के बाद बने सम्यक क्रांतिवेश

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी दीक्षा व आचार्य सुभाषचन्द्र जी रहे यज्ञ के आचार्य

औरंगाबाद में मई मास में होगा

तीन दिवसीय महाराष्ट्र प्रांतीय कार्यकर्ता शिविर का आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ओ३म् के ध्वजारोहण से किया

आर्य राष्ट्र निर्माण सम्मेलन का उद्घाटन

नवनिर्मित भवन का नाम रखा गया महर्षि दयानंद धाम | **चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का भी हुआ आयोजन** | **रोमांचित करने वाला रहा पूरा कार्यक्र**

दिल्ली से लगभग दो हजार किलोमीटर दूर पहाड़ियों से घिरे हुये व एक छोटी सी झील के किनारे पर बसे एक छोटे से व ऐतिहासिक गावँ घटांग्रा में 5 अप्रैल 2015 को एक अविस्मरणीय कार्यक्रम का आयोजन सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा के अंतर्गत आने वाले परभणी जिले के इस गावँ में आज बहुत लंबे अंतराल के बाद महाराष्ट्र में संन्यास दीक्षा हुई। दलित मित्र व आर्य गौरव जैसे अलंकारों से सम्मानित किये जा चुके गरीब, मजदूरों को न्याय व शिक्षा दिलवाने वाले स्वामी दयानंद विद्यालय घटांग्रा के संस्थापक आर्य नेता श्री संभा जी राव माणिकराव पवार ने आज समाज सेवा व ऋषि परम्परा का निर्वहन करते हुये संन्यास की दीक्षा ली। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें संन्यास की दीक्षा दी तथा गुरुकुल येडशी के संचालक आचार्य सुभाषचन्द्र जी ने पौरोहित्य का कार्यभार संभाला। स्वामी जी ने संभा जी राव पवार को संन्यास के बाद नया नाम सम्यक क्रांतिवेश दिया। भावुकता भरे वातावरण में जब वे भिक्षा मांगने लगे तो वातावरण बहुत ही अदभुत था। संन्यास से पूर्व पिछले कई दिनों से चले आ रहे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति हुयी। महायज्ञ के ब्रह्मा का पद आचार्य सुभाषचन्द्र ने संभाला। गुरुकुल येडशी के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। कार्यक्रम में आर्य राष्ट्र निर्माण सम्मलेन का आयोजन भी आकर्षण का केंद्र रहा। इसकी अध्यक्षता सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। स्वामी आर्यवेश

जी ने अपने मुख्य उद्बोधन में कहा की आज पुनः आर्य समाज को जन जन का आंदोलन बनाया जाना चाहिए। आज देश को फिर से आर्य समाज की जरुरत है। वही आर्य समाज जो कभी आम आदमी की लड़ाई लड़ता था। वही आर्य समाज जिसने देश की आजादी में सबसे बड़ा योगदान दिया था। वही आर्य समाज जिसने सती प्रथा के विरुद्ध कानून बनवाया था। वही आर्य समाज जिसने सबसे पहले महिलाओं के अधिकारों की वकालत की। वही आर्य समाज जिसने सबसे पहले बेटी बचाओ अभियान की शुरुआत की। वहीं आर्य समाज जिसने जातिवाद के विरुद्ध सर्वप्रथम शंखनाद किया था। आज फिर से आर्य समाज को जन जन की जरूरत है। इसलिए वर्तमान समय के सामाजिक ज्वलन्त मुद्दों को अपने हाथ में लेकर आर्य समाज अन्य सामाजिक संगठनों को साथ लेकर आगे बढ़े। बस पहल करने की जरूरत है समाज आपके साथ खड़ा दिखाई देगा।

स्वामी आर्यवेश जी ने सम्यक क्रांतिवेश जी के संन्यास को भी ऐतिहासिक बताया और कहा कि बहुत

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

भावी कार्यक्रमों की योजनाओं के साथ उत्साह भरे वातावरण में

दयानंद धाम, घटांग्रा (परभणी) महाराष्ट्र में सम्पन्न हुआ पूरा कार्यक्रम

दयानंद धाम को बनाया जायेगा महाराष्ट्र की सभी गतिविधियों का केंद्र

संभा जी राव पवार द्वारा लिखित पुस्तक 'सम्यक दर्शन' का भी हुआ विमोचन

लम्बे समय के बाद महाराष्ट्र में दयानंद के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए संन्यास लेकर अपनी आहुति के रूप में इन्होंने जीवन लगाने का निर्णय लिया है। उन्होने सम्यक क्रांतिवेश जी को बधाई दी तथा उपस्थित आर्य जनों का आह्वान किया कि जिनकी आयु वानप्रस्थ की हो चुकी है व जिनकी आयु 75 वर्ष से ऊपर हो चुकी है उनको अब ऋषि दयानंद द्वारा बताई गई ऋषियों की परम्परा अनुसार वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा लेकर आश्रम व्यवस्था का पालन करना चाहिए। स्वामी जी ने आर्य युवकों का भी आह्वान किया कि अब वो भी आगे आकर अपनी जिम्मेदारी निभायें। स्वामी जी ने आर्य युवक परिषद् महाराष्ट्र के अध्यक्ष सम्यक क्रांतिवेश जी से बात करके महाराष्ट्र के आर्य युवक परिषद के संयोजक के रूप में जालना आर्य समाज के प्रधान व युवा आर्य कार्यकर्त्ता श्री संतोष आर्य को नियुक्त किया। दिल्ली से पधारे बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूँ कि उन्होंने बिलकुल ग्रामीण क्षेत्र में ऋषि दयानंद की विचारधारा को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संन्यास दीक्षा को उन्होंने सभी के लिए प्रेरणा दायी बताया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री बिरजानंद जी ने कहा की यहां का वातावरण देखकर एक तरह से हमें जंगलो में बनाये गए आश्रमों की याद दिला दी है। शिक्षा के क्षेत्र में श्री सम्भाजी राव पंवार तथा आर्य समाज द्वारा यहाँ पर किये गए कार्यों की भी उन्होंने प्रशंसा की।

आर्य नेता व प्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रि. सदाविजय आर्य ने कहा की आज महाराष्ट्र में आर्य समाज को मजबूत करने की आवश्यकता है। उसके लिए सबसे पहले संगठन को शक्तिशाली तरीके से खड़ा करके एक आंदोलन चलाने की योजना भी बनाई जाये। स्वामी सम्यक क्रांतिवेश जी ने सभी आगन्तुक जनों का आभार प्रकट किया व कहा कि आर्य समाज महाराष्ट्र में अब जन आन्दोलन का रूप लेगा। युवक क्रांति अभियान को भी गति दी जायेगी। महायज्ञ के ब्रह्मा व संन्यास दीक्षा के आचार्य श्री सुभाषचन्द्र ने कहा की संन्यास के दौरान तीन ऐषणाओं से दूर रहने का संकल्प दिलवाया जाता है। आज से वह व्यक्ति अपने लिए नहीं बल्कि समाज के लिए व समाज के साधनों से ही आगे बढ़ता जायेगा। पुत्रेषणा, वित्तेषणा व लोकेषणा को छोड़कर अध्यात्म मार्ग का पथिक बनेगा। इस अवसर पर संभा जी राव पवार से आर्य समाज के माध्यम से संपर्क रखने वाले कार्यकर्ताओं ने भी अपनी शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर आर्य युवक कार्यकर्त्ता श्री कैलाश चन्द्र ने मंच संचालन किया। बाहर से पधारे नेता व कार्यकर्ताओं को शाल व श्रीफल देकर सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर संभा जी राव पवार द्वारा लिखित पुस्तक सम्यक दर्शन का विमोचन भी सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने व अन्य आर्य नेताओं ने किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रातः ओ३म् के ध्वजारोहण से हुआ था। ध्वजारोहण सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। इस अवसर पर स्वामी सम्यक क्रांतिवेश जी, प्रो. श्योताज सिंह,बिरजानंद एडवोकेट, प्रि. सदाविजय आर्य, जगदीश चन्द्र सूर्यवंशी, शिवाजी राव शिंदे, आचार्य संतराम, सुभाष वेदपाठक, सुभाष निम्बालकर, दत्तात्रय मुले, उत्तम राव तोषनीवाल, संतोष आर्य, आचार्य सुभाषचन्द्र, श्रीमती मधुश्री आर्या, धन सिंह सूर्यवंशी, बद्री प्रसाद सोनी, विद्याव्रत आर्य, नरेंद्र वालेचा, रामचन्द्र मोरे, रामचन्द्र लोखंडे,किशन राव काम्बले, ओम प्रकाश सूर्यवंशी आदि उपस्थित रहे। सम्मलेन के बाद कार्यकर्ताओं की विशेष बैठक में पूरे महाराष्ट्र के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। कई महत्वपूर्ण विषयों पर गहन चर्चा की गई। मई मास में महाराष्ट्र के प्रांतीय आर्य कार्यकर्ताओं का शिविर आयोजित होना निश्चित किया गया। श्री जगदीश चन्द्र सूर्यवंशी जी को इसका मुख्य संयोजक नियुक्त किया गया। जबकि उनके साथ 4 साथियों को सह संयोजक नियुक्त किया गया। आर्य युवक परिषद् के शिविरों की रूप रेखा भी बनाई गयी। संतोष आर्य के नाम का आर्य युवक परिषद् महाराष्ट्र के संयोजक के रूप में अनुमोदन भी किया गया। आर्य समाज को सोशल मिडिया से जोड़ने पर भी विचार विमर्श हुआ। हर मास बैठक करने व किन्ही निश्चित मुद्दों पर कार्य करने पर भी गहन मंथन हुआ। श्री जगदीश सूर्यवंशी जी व उनके साथियों ने स्वामी आर्यवेश जी व दिल्ली से पधारे सभी अतिथियों की आवास व भोजन की पूर्ण व्यवस्था प्रशंसनीय ढंग से की थी। कार्यक्रम से पूर्व औरंगाबाद में जगदीश जी की धर्मपत्नी व उनका बेटा व औरंगाबाद के स्थानीय आर्य कार्यकर्तागण रेलवे स्टेशन पर ओ३म् के झण्डों के साथ स्वागत में तैयार मिले। उन्होंने सभी के लिए भोजन भी उपलब्ध करवाया। उसके बाद जालना आर्य समाज के प्रधान संतोष आर्य, धन सिंह सूर्यवंशी व बहुत से आर्य कार्यकर्ता ओ३म् के झण्डों सहित रेलवे स्टेशन जालना पर जोर जोर से जय घोष करते हुये मिले। 15 मिनट तक रेल रुकी रही और स्वामी दयानंद की जय के नारे व आर्य समाज अमर रहे के नारे चलते रहे। सैंकड़ों उत्साहित आर्य कार्यकर्ताओ ने स्वामी जी का स्वागत वहीं पर किया। उसके बाद परभणी में आर्य प्रतिनिधि सभा महराष्ट्र के अधिकारी स्वागत में मिले जहां से सभी कृषि विश्वविधालय के विश्राम गृह में पहुंचे।

दिल्ली से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ सभा के अन्तरंग सदस्य प्रो. श्योताज सिंह, श्री बिरजानंद एडवोकेट, आचार्य संतराम व ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य भी पहुंचे। महाराष्ट्र के आर्य नेता प्रि. सदाविजय आर्य, आचार्य सुभाषचन्द्र, श्री जगदीश चन्द्र सूर्यवंशी, श्री सुभाष निम्बालकर, श्री सुभाष वेदपाठक, श्री संतोष आर्य, श्री धन सिंह आर्य, सहित सैंकड़ों आर्य कार्यकर्त्ता रहे शामिल

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रांतीय संयोजक बनाये गए जालना के संतोष आर्य

thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य समाज के संन्यासियों, वानप्रस्थियों, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के संगठन

वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में

पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी,स्वामी आर्यवेश जी,स्वामी प्रणवानन्द जी,स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी, धर्ममुनि जी, स्वामी चन्द्रवेश जी आदि के नेतृत्व में

कन्या भ्रूण हत्या, पाखण्ड–अन्धविश्वास, नशाखोरी व अश्लीलता के विरूद्ध

वेद प्रचार जन चेतना यात्रा

यज्ञ व उद्घाटनः सोमवार, 13 अप्रैल 2015, प्रातः 8 से 10 बजे तक

स्थानः वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

संयोजकः प्रि.धनीराम, स्वामी यतीश्वरानन्द (विधायक), गोविन्दसिंह भण्डारी, डॉ.वीरेन्द्र पवार, प्रेम प्रकाश शर्मा

समापन समारोहः वीरवार, 22 अप्रैल 2015, प्रातः 10 से 1 बजे तक, गुरूकुल होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

सोमवार 13 अप्रैल, 2015

यज्ञ प्रात : 8 से 10 बजे तक – वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार
संयोजक : प्रिं. धनीराम, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी प्रधान, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता पूर्व प्रधान, प्रेम प्रकाश शर्मा, डॉ. वीरेन्द्र पंवार, प्रातः 11 बजे आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, संयोजक : स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, दोपहर : 12.30 बजे पातंजलि योगपीठ, संयोजक : महेन्द्र सिंह शास्त्री, शिवकृष्ण आर्य, मध्यान्ह : 2 बजे रूड़की, संयोजक : प्रकाशचन्द्र सैनी, 3 बजे भगवानपुर, संयोजक : रामकुमार, 3.30 बजे गागल, संयोजक : रामकुमार आर्य, 4 बजे सहारनपुर, संयोजक : हरपाल सिंह आर्य, 6 बजे देवबन्द, संयोजक : देवेन्द्र त्यागी, सायं 7.30 बजे, मुजफ्फरनगर, संयोजक : देवेन्द्र पाल वर्मा सभा प्रधान

मंगलवार 14 अप्रैल, 2015

मुजफ्फरनगर से प्रातः 10 बजे काकड़ा, संयोजक : रामकुमार सिंह आर्य, 10.30 बजे शाहपुर संयोजक : डॉ. महावीर सिंह आर्य, 11 बजे सडब्बर, संयोजक : रामकुमार सिंह आर्य, 11.30 बजे बुढ़ाना, संयोजक : अरविन्द कुमार, 1.30 बजे, दाहा, संयोजक : डॉ. चन्द्रवीर सिंह, विजय सिंह राठी, पप्पू आर्य, 3 बजे पलड़ी, 4 बजे बिनौली, 4.30 बजे जिवाना इण्टरनेशनल, गुरुकुल, संयोजक : प्रो. बलजीत सिंह, 5.30 बजे जोहड़ी, 6 बजे सिरसली, संयोजक : सत्यवीर सिंह फौजी प्रधान पंचायत।

बुद्धवार 15 अप्रैल, 2015

सिरसली से 11 बजे जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत, संयोजक : चौ. वीरेन्द्रपाल सिंह प्रधान, डॉ. महक सिंह आर्य, प्रिं. यशवीर सिंह, 12.30 बजे बड़ौली, संयोजक : मा. सोहन पाल सिंह आर्य, ब्रह्मचारी रामफल, 2 बजे बागपत, संयोजक : राकेश आर्य, 5 बजे लोनी, 6 बजे आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद, संयोजक : श्रद्धानन्द शर्मा, पं. माया प्रकाश त्यागी, सत्यवीर चौधरी, सुनील गर्ग, प्रवीण आर्य, चौ. बीरसिंह, तेजपाल आर्य, मा. ज्ञानेन्द्र आर्य, 8.30 बजे श्री शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद, संयोजक : स्वामी सत्यवेश

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में

वेद प्रचार यात्रा का राजधानी दिल्ली में दिनांक 16 अप्रैल 2015 का स्वागत व प्रचार का विशेष कार्यक्रम

प्रातः 8 बजे संन्यास आश्रम, गाजियाबाद से शुभारम्भः
संयोजक–स्वामी सत्यवेश जी, सौरभ गुप्ता, आशीष सिंह
प्रातः 8.30 बजे, जी.टी.रोड़, वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद–
संयोजकः प्रमोद चौधरी, सुरेश आर्य, के.के.यादव, हीराप्रसाद शास्त्री, शिशुपाल आर्य, यज्ञवीर चौहान, डॉ. आर. के. आर्य ।
प्रातः 9 बजे, झिलमिल मैट्रो स्टेशन, शाहदराः–
संयोजकः रामकुमार सिंह, वेदप्रकाश आर्य, नरेन्द्र आर्य, सन्तोष शास्त्री, राजेन्द्र खारी, राजीव कोहली, अरूण आर्य, विमल आर्य, माधव सिंह।
प्रातः 9.20 बजे, आर्य समाज, दिलशाद गार्डनः–
संयोजकः जवाहर भाटिया, सोमदेव कथूरिया, सुरेश मुखीजा,अरूणा मुखी।
प्रातः 9.45 बजे, सूरजमल विहार चौकः
संयोजक–महेन्द्र आहूजा (उपमहापौर), यशोवीर आर्य, रविन्द्र मेहता, वीरेन्द्र जरयाल, विजयारानी शर्मा, विकास गोगिया, महेश भार्गव, संजय आर्य, सुभाष ढींगरा, सुरेन्द्र गम्भीर, शिवम मिश्रा, अमीर चन्द रखेजा।
प्रातः 10.30 बजे, आर्य समाज, पुलबंगश, आजाद मार्केट–
संयोजकः अखिलेश भारती, ओम सपरा, गोपाल जैन, कमल आर्य।
प्रातः 10.45 बजे, आर्य समाज, प्रताप नगर– संयोजकः वीरेन्द्र कुमार, केवलकृष्ण सेठी, गुलशन कुमार, ज्योति शर्मा, संजीव आर्य।
प्रातः 11.15 बजे, चौधरी मिष्ठान भण्डार, शक्ति नगर छोटा गोल चक्कर–
संयोजकः योगेश आर्य, सुधीरचन्द घई, कुंवर पाल शास्त्री
प्रातः 11.30 बजे, आर्य समाज, शक्ति नगर–
संयोजकः नरेन्द्र गुप्ता, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, हरिसिंह चौहान।
दोपहर 12 बजे, आर्य समाज, वजीरपुर जे.जे.कालोनी– संयोजकः भूदेव आर्य, रामहेत आर्य, वीरेश आर्य, गजेन्द्र आर्य, विकान्त चौधरी।
दोपहर 12.15 बजे, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1, संयोजकः राममेहरसिंह, राकेश खुल्लर, जीवनलाल आर्य, संजय कपूर,देवेन्द्र भगत ।
दोपहर 12.30 बजे, बी ब्लाक, अशोक विहार–1, – संयोजकः डा.महेन्द्र नागपाल, ललित गर्ग, योगेश वर्मा, राजेन्द्र गर्ग, वैद्य इन्द्रदेव ।
दोपहर 12.45 बजे, शालीमार बाग ए एल मार्केटः
संयोजकः ममता नागपाल (पार्षद), राजेश्वर नागपाल, अमित नागपाल।
दोपहर 1.00 बजे, आर्य समाज, शालीमार बाग बी.एन.पूर्वी– संयोजकः बी.बी.तायल, भूदेव शर्मा, नरेन्द्र अरोड़ा, रविन्द्र आर्य, देवराज कालरा।
दोपहर 1.15 बजे, आर्य समाज, शालीमार बी.जे.पश्चिमी–
संयोजकः डा.ओमप्रकाश मान, अमित मान, मधुरप्रकाश आर्य ।
दोपहर 1.30 बजे, आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव–
संयोजकः सत्यप्रकाश आर्य, डा. डी.पी.एस. वर्मा, माता कृष्णबाला, ओमप्रकाश गुप्ता, रणसिंह राणा, धर्मवीर आर्य, सतीश आर्य, सुषमा अरोड़ा।
दोपहर 1.45 बजे, आर्य समाज, प्रशान्त विहार–संयोजकः कृष्णचन्द पाहुजा, सोहनलाल मुखी, सुरेश हसीजा, अन्जु जावा, शिखा अरोड़ा ।
दोपहर 2.00 बजे, (भोजन), आर्य समाज, रोहिणी, सैक्टर–7, संयोजकः आर्य तपस्वी सुखदेव जी शिवकमार,गुप्ता,सरेन्द्र गुप्ता,राजीव आर्य।
दोपहर 3.00 बजे, आर्य समाज, सैनिक विहार संयोजक –सुनील गुप्ता, कृष्णा सपरा, सोनल सहगल, विनोद गुप्ता, सुदेश खुराना, प्रवीण कोहली।
दोपहर 3.15 बजे, मेन बाजार रानी बाग–
संयोजकः दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, यज्ञदत आर्य।
दोपहर 3.45 बजे, आर्य समाज, रेलवे रोड़, रानी बाग संयोजक–राजकुमार शर्मा, सोमनाथ पुरी, मैथिली शर्मा, योगेन्द्र शर्मा, अवधेश आर्य, विजय आर्य।
सायं 4.15 बजे, आर्य समाज, पूर्वी पंजाबी बाग–
संयोजकः बलदेव जिन्दल, रवि चडडा, रमेश गिरोत्रा, एस.के.कोछड़ ।
सायं 5.15 बजे,आर्य समाज,रमेश नगर– संयोजकः नरेन्द्र आर्य 'सुमन', सत्यपाल नांरग, नरेश विज, राजेन्द्र लाम्बा, डा. सुषमा शर्मा, वेद प्रकाश।
रात्री 7.30 बजे, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में रात्री विश्राम ।

शुक्रवार 17 अप्रैल 2015 का कार्यक्रमः

प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक, गुरूकुल गौतम नगर में यज्ञ व स्वागत समारोह द्वारा दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल–
संयोजकः स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, रविदेव गुप्ता, सुभाष चांदला, विद्याभूषण गुप्ता, प्रकाशवीर शास्त्री, ओमवीर सिंह, देवदत्त आर्य।
प्रातः 10 बजे, आर्य समाज, मस्जिद मोठ–संयोजकः चतरसिंह नागर, सत्यपाल आर्य, ओमप्रकाश सैनी, देवेन्द्र कुमार, रामफल खर्ब।
प्रातः 10.15 बजे, आर्य समाज, डिफेन्स कालोनी गोल चक्कर–
संयोजकः आनन्द चौहान व अजय चौहान।
प्रातः 10.30 बजे, आर्य समाज, लाजपत नगर–2, –संयोजकः राजेश मेहन्दीरता, सुरेन्द्र शास्त्री, पं.मेघश्याम वेदालंकार, सोमनाथ कपूर ।
प्रातः 10.45 बजे, आर्य समाज, अमर कालोनीः जितेन्द्र डावर, ओमप्रकाश छाबड़ा, प्रभा ग्रोवर, अर्चना पुष्करना, स्वर्ण गंभीर ।
प्रातः 11.15 बजे, आर्य समाज, कालका जी– संयोजकः रामचन्द कपूर, रमेश गाडी, रामप्रसाद बरेजा, राकेश भटनागर, सुधीर मदान।
दोपहरः 12.00 बजे, बदरपुर बार्डर,संयोजक–श्यामसिंह यादव, गजेन्द्र चौहान, सुशील आर्य, रामसेवक आर्य, जितेन्द्र सिंह आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य।
दोपहर 12.30 से 1.30 तक, (भोजन), गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय, फरीदाबाद– संयोजकः पी.के.मितल व आचार्य ऋषिपाल।
दोपहर 2.30 से 3.30 तक, महर्षि दयानन्द योगधाम, गली न.8, एन एच–3, एस.जी.एम.नगर, फरीदाबाद–संयोजकः जयदेव शर्मा, रामखिलावन आर्य, सुरेश गुलाटी, विमला ग्रोवर, महेश गुप्ता, सत्यभूषण आर्य, कौशल मुनि।
बल्लभगढ़, 4.30 बजे संयोजक : जितेन्द्र सिंह, नन्दलाल कालड़ा, सुशील शास्त्री, कुलभूषण आर्य, पलवल, डॉ. धर्म प्रकाश, संयोजक – नारायण सिंह आर्य, चन्द्रपाल, जय प्रकाश आर्य,
6.30 बजे होडल, संयोजक – नेतराम शास्त्री, लाला हेतराम गर्ग
8 बजे मथुरा, संयोजक – स्वामी धर्मानन्द, स्वामी सोम्यानन्द, महावीर सिंह आर्य, वीरेन्द्र सिंह

रात्री 8.00 बजे, गुरूकुल दखौला, मथुरा में रात्री विश्राम

18 अप्रैल 2015, प्रातः 10 से 1.00 बजे तक, आगरा में सम्मेलन–
संयोजकः रमाकान्त सारस्वत, सुशील विद्यार्थी, अर्जुनदेव महाजन, सत्यदेव गुप्ता, विजय अग्रवाल, डा.विद्यासागर, अरविन्द मेहता, राजकुमारी आर्या, डा. वीरेन्द्र खण्डेलवाल, हरिशंकर अग्निहोत्री।
3 बजे धौलपुर, 3.5 बजे मुरैना, 5 बजे अम्बाह, 6 बजे गोरमी, 7 बजे ग्वालियर
संयोजक – डॉ. लक्ष्मणदास आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य भारत
19 अप्रैल, 2015, ग्वालियर से 11 बजे उबरा, 12 बजे दतिया, 1 बजे झांसी, संयोजक –देवसिंह आर्य, 3 बजे ललितपुर, 6 बजे सागर, संयोजक : अजय आर्य, संयोजक : लक्ष्मी नारायण भार्गव, जयनारायण आर्य, 20 अप्रैल, 2015, सागर से बीना, बबीना, गंज बासौदा, 2 बजे विदिशा, संयोजक : बहन गायत्री मीना, सायं 8 बजे भोपाल, संयोजक : इन्द्रजीत त्यागी, केशवसिंह तोमर, किशन लाल आर्य, 21 अप्रैल, 2015, भोपाल से सुल्तानपुर, बाड़ी, गुरुकुल होशंगाबाद, संयोजक : स्वामी ऋतस्पति, महात्मा देवमुनि, स्वामी निर्भयानन्द

सभी आर्य जनों से अनुरोध है कि यात्रा के मार्ग में यथा सम्भव कार्यक्रम, स्वागत, भोजन व आवास आदि का सुन्दर प्रबन्ध करने व करवाने की कृपा करें।

समस्त सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रव्यापी जन–चेतना अभियान को सफल बनाने के लिए सभी आर्य समाजें, जिला सभाएं व प्रतिनिधि सभाएं दिल खोलकर दान देकर अपनी निष्ठा का परिचय देवें तथा समय देकर यात्रा को सफल बनावें

निवेदक

वैदिक विरक्त मण्डल

पत्र व्यवहार का पता : ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
सम्पर्क दूरभाष :– 9013783101, 9354840454
E-mail:sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com, aryavesh@gmail.com

thearyasamaj.org

चित्रों के झरोखे से संन्यास दीक्षा एवं आर्य राष्ट्र सम्मेलन कार्यक्रम

thearyasamaj.org

चित्रों के झरोखे से संन्यास दीक्षा एवं आर्य राष्ट्र सम्मेलन कार्यक्रम

thearyasamaj.org

'सत्यार्थ प्रकाश का बार-बार अध्ययन जीवन पथ का मार्गदर्शक एवं हितकारी'

– मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का निर्माण लोगों को वेदों व सत्य धर्म का परिचय देने के लिए प्रथम सन् 1874–75 में किया था। इस ग्रन्थ का संशोधित व परिवर्धित रूप उनकी सन् 1883 में देहावसान के बाद प्रकाशित हुआ जिसका निरन्तर प्रकाशन व प्रचार हो रहा है। सत्यार्थ प्रकाश को वैदिक मान्यताओं का विषयानुसार वर्णन ग्रन्थ कह सकते हैं जो किएक ग्रन्थ मात्र न होकर सत्य वैदिक मान्यताओं का प्रमुख धर्म ग्रन्थ है। इसमें तीन शाश्वत सत्ताओं ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित मनुष्य के हर आयु के कर्तव्यों व सृष्टि उत्पत्ति से लेकर प्रलयावस्था तक तथा बन्धन–मोक्ष आदि अनेक विषयों का वर्णन है। हमने इस ग्रन्थ को पढ़ा है और इससे उत्पन्न ज्ञान व विवेक के आधार पर हम यह अनुभव करते हैं कि मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने व संसार का यथार्थ परिचय कराने वाला इससे अधिक सरल व उपयोगी ग्रन्थ संसार में अन्य कोई नहीं है। यह अनुभव केवल हमारा ही नहीं है अपितु इसका अध्ययन करने वाले प्रायः सभी व अधिकांश लोगों का है जिसमें आर्यजगत के वरिष्ठ विद्वान पं. गुरूदत्त विद्यार्थी (1864–1890) भी सम्मिलित हैं। उनके जीवन का एक प्रेरणादायक प्रसंग ही लेख की भूमिका बना है। हम यहां यह भी कहना चाहिते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश में जो ज्ञानराशि है, उसका देश व जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जो प्रभाव हुआ है उसका मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। यदि देखें तो सत्यार्थ प्रकाश ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्ति कर देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिख कर सम्पूर्ण मानव जाति पर एक महान उपकार किया है। इस ग्रन्थ के प्रभाव से ही देश को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्म्मा, महादेव गोविन्द रानाडे, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि समाज सुधारक व देश भक्त प्रदान मिले हैं। ऐसे ही कोटि कोटि लोग विगत 140 वर्षों में सत्यार्थ प्रकाश से प्रभावित होकर देश व जाति के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं। यहां हम पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जी के जीवन का सत्यार्थ प्रकाश से जुड़ा एक प्रसंग प्रस्तुत कर रहे हैं। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी लाहौर में संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी पढ़ाते थे और कक्षा के विद्यार्थियों से कहते थे कि प्रातः व सन्ध्या के पश्चात् एक घण्टा तक सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़ा करो। वे कहते थे कि मैंने ग्यारह बार सत्यार्थप्रकाश को ध्यान से पढ़ा है और जब–जब इस ग्रन्थ को उन्होंने पढ़ा, उन्हें इसके नये–नये अर्थ सूझे। वे कहा करते थे कि यह खेद का बात है कि सत्यार्थप्रकाश को लोग कई बार नहीं पढ़ते। एक बार प्राणायाम की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा था कि प्राणयाम असाध्य रोगों को भी दूर कर सकता है। उन्होंने बताया था कि कभी–कभी किसी स्थूलकाय व्यक्ति को यह प्राणयाम कुछ दुर्बल बना देता है परन्तु थोड़े समय के पश्चात् वह व्यक्ति सशक्त व स्वस्थ हो जाता है। उनका यह कथन था कि संसार में सबसे उपयोगी वस्तु निःशुल्क मिला करती है। अतः भयंकर रोगों की सर्वोत्तम औषधि वायु है और यह वायु प्राणायाम द्वारा औषधि का काम दे सकती है।

इसी से मिलता–जुलता एक संस्मरण उनके अभिन्न मित्र लाला जीवनदास ने अन्यत्र भी उल्लेखित किया है जहां वह लिखते हैं कि "जितना अधिक वे स्वामी दयानन्द की पुस्तकों का अध्ययन करते थे, महर्षि के प्रति उनकी भक्ति उतनी ही प्रगाढ़ और वैदिक धर्म में उनकी श्रद्धा उतनी ही सुदृढ़ होती जाती थी। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश को कम से कम 18 बार पढ़ा था। वे कहते थे कि जितनी बार मैं इसे पढ़ता हूं, मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ न कुछ नवीन भोजन मिलता है। उनका कथन है कि यह पुस्तक गूढ़ सच्चाइयों से भरी पड़ी है।"

हमें पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के मात्र 26 वर्ष से भी कुछ कम दिनों के अति व्यस्त जीवन में 18 बार सत्यार्थप्रकाश को पढ़ना किसी आश्चर्य से कम दृष्टिगोचर नहीं होता। जिस व्यक्ति ने एम. ए. विज्ञान में अविभाजित पंजाब जिसमें वर्तमान का पूरा पाकिस्तान, भारत के पंजाब, हिमाचल, हरयाणा व दिल्ली के भी कुछ भाग शामिल थे, में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया हो व अपने अध्ययन काल में ही अनेकानेक इतर विषयों का अध्ययन करता रहा हो, प्रवचन देता हो, पत्रों का सम्पादन करता हो, आर्यसमाज के सत्संगों व उत्सवों में प्रवचन करता हो व डी.ए.वी. आन्दोलन के प्रचार के लिए देश भर में भ्रमण व अपीले करता रहा हो, उसका 26 वर्षों के अल्प जीवन काल में 18 बार सत्यार्थप्रकाश पढ़ना निःसन्देह आश्चर्यजनक है। सत्यार्थ प्रकाश का महत्व इसलिये भी है कि इसमें ईश्वर व धर्म सम्बन्धी अनेक यथार्थ तथ्यों का प्रतिपादन है जो समकालीन व इससे पूर्व के साहित्य में उपलब्ध नहीं होते। इसको इस रूप में भी समझ सकते हैं कि मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है, यह यथार्थ रूप में सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर ही हृदयंगम होता है। सच्ची अंहिसा की शिक्षा इस ग्रन्थ को पढ़कर मिलती है। जीवन के उद्देश्य मोक्ष के अतिरिक्त मोक्ष प्राप्ति के साधनों को भी तर्क–वितर्क के माध्यम से समझाया गया है जिसे सच्चे मन से अध्ययन करने वाला स्वीकार करता है। यह पुस्तक ऐसी है कि जिसके खण्डन में अभी तक कोई ग्रन्थ तैयार नहीं हुआ जबकि अन्य ग्रन्थों की मान्यताओं पर उसी मत के अनुयायियों में मतभेद पाये जाते हैं और कईयों में तो तर्क की इजाजत ही नहीं है। अतः सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से इसके अध्येता को जो लाभ प्राप्त होता है वह अन्य मत–मतान्तरों के अनुयायियों को प्राप्त नहीं होता।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जी की सत्यार्थप्रकाश के प्रति जो टिप्पणी की गई है वह इस लिए भी महत्वपूर्ण है कि वह एक असाधारण व्यक्ति थे। हमारे देश में एक प्रकार से एक अन्धपरम्परा चलती रही है कि विदेशी विद्वान कुछ भी कहें, उसे प्रमाणित स्वीकार किया जाता है और अपने देश के चिन्तकों व विचारकों के सत्य विचारों को भी विदेशी विद्वानों के भ्रमोत्पादक दृष्टिकोण से ही देखा जाता है। गुरूदत्त जी ने इस परम्परा को स्वीकार न कर विदेशी विद्वानों के चिन्तन, मान्यताओं व निष्कर्षों पर आपत्तियां ही नहीं की अपितु उनके खण्डन में लेख व पुस्तकें लिखी जिससे वह निरूत्तर हो गये। आज भी उनके उपलब्ध साहित्य को पढ़ने पर उनकी विलक्षण बुद्धि से प्रस्फुटित विचारों को पढ़कर लाभ उठाया जा सकता है। उन्होंने अपने जीवन में वेद और वैदिक साहित्य के प्रचार में जो योगदान दिया है वह चिरस्मरणीय है। उन्होंने वैदिक साहित्य को समृद्ध किया। विदेशी विद्वानों का मिथ्या दम्भ चकनाचूर किया। वैदिक विचारों को अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत कर अंग्रेजी शिक्षित वर्ग में सबसे पहले प्रचारित व प्रकाशित किया। उन्होंने जीवन का एक–एक क्षण वेदों के प्रचार व प्रसार में व्यतीत किया। हम अनुमान करते हैं कि यदि उन्हें 60–70 वर्ष का जीवन मिला होता तो वह इतना कार्य करते कि जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। उन्होंने अपने जीवन में महर्षि दयानन्द का अनुकरण कर उनके जैसा बनने का प्रयास किया था। वह अधिक से अधिक जितना कर सकते थे उन्होंने किया। उन्होंने 26 वर्ष की आयु में जितना कार्य किया है, उनसे पूर्व शायद ही किसी वैदिक विद्वान व धर्म प्रचारक ने सारी दुनिया में किया होगा। हमारा यह भी अनुमान है कि यदि उन्हें 70 वर्ष का जीवन मिला होता तो वह 100 से अधिक बार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करते और इससे उनके व्यक्तित्व में जो श्रेष्ठता व महानता उत्पन्न होती, उसका हम केवल अनुमान ही कर सकते हैं। उनके प्रेरक जीवन का अध्ययन युवा पीढ़ी के लिए आदर्श है। सभी को उनका जीवन चरित पढ़कर प्रेरणा लेनी चाहिये।

पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोनः09412985121

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिख कर सम्पूर्ण मानव जाति पर एक महान उपकार किया है। इस ग्रन्थ के प्रभाव से ही देश को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्म्मा, महादेव गोविन्द रानाडे, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि समाज सुधारक व देश भक्त मिले हैं। ऐसे ही कोटि कोटि लोग विगत 140 वर्षों में सत्यार्थ प्रकाश से प्रभावित होकर देश व जाति के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं।

वैदिक नित्यकर्म विधि

लेखक एवं सम्पादक – आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य, एम. ए.

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संध्या, ईश्वरस्तुति, प्रार्थनामंत्र, दैनिकयज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियां, अमावस्या-पूर्णिमा आदि के विशेष मंत्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर का बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन-शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त। विशेष बात यह है कि सब मंत्र मोटे और लाल, सभी मंत्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है। 23X36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, मूल्य एक प्रति 100 रुपये है। डाक व्यय अलग होगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

मधुर प्रकाशन - 2804, गली आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली-110006

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :- 011-23238631,

रामनवमी पर्व एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा रामनवमी पर्व एवं आर्य समाज का स्थापना दिवस 29 मार्च, 2015 दिन रविवार को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम प्रातः 9 बजे यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ हुआ जिसके मुख्य यज्ञमान श्री इन्द्रवीर मल्होत्रा एवं ऊषा रानी मल्होत्रा, श्री आत्म प्रकाश एवं श्री लाज वर्मा एवं श्री सुभाष अबरोल श्रीमती रीटा अबरोल एवं श्री हिमांशु श्रीमती सोनम रहे, कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज जिला सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा ने की यज्ञोपरान्त डॉ. योगेश शर्मा एवं डॉ. निमिता शर्मा ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये मुख्य वक्ता श्री श्रवण कुमार बत्रा ने अपने वक्तव्य में कहा कि ऋषिवर देव दयानन्द ने अपने आर्य समाज जैसी आन्दोलनकारी संस्था स्थापित कर देश को पराधीनता, अज्ञानता, अन्धविश्वास, रुढ़िवाद आदि कुरीतियों से मुक्ति दिलाई। महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल, 1875 ई. को आर्य समाज की स्थापना सर्वप्रथम मुम्बई में की जिसे काकड़वाणी आर्य समाज से जाना जाता है। श्री रमेश शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किए यज्ञ के ब्रह्मा श्री कर्मवीर शास्त्री ने आर्य समाज के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज की गतिविधियों एवं उपलब्धियों से अवगत कराया एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के मर्यादित जीवन का वर्णन किया, तदुपरान्त पी. एन. बी. से सेवा निवृत्त श्री इन्द्रवीर मल्होत्रा को आर्य समाज दाल बाजार के पदाधिकारियों ने पुष्प माला पहनाकर एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया और महर्षि दयानन्द का सुन्दर चित्र भी उन्हें भेंट किया कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के महामन्त्री महेन्द्रपाल विग एवं आर्य समाज के वरिष्ठ उपप्रधान देवपाल आर्य ने किया। कार्यक्रम में लुधियाना की समस्त आर्य समाजों का भरपूर सहयोग रहा, कार्यक्रम में पधारे सभी आगन्तुकों का आर्य समाज के प्रधान श्री आत्म प्रकाश ने धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के उपरान्त ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशेष सहयोग श्री सुशील महाजन, के. के. पासी, राजेन्द्र गुप्ता, पुष्प कुमार खुल्लर, वेदप्रिय चावला अनिल आर्य, कुलदीप राम, बृजेन्द्र मोहन भण्डारी, राकेश मेहता, नवीन मौर्य, अजय सूद आदि थे।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज शामली द्वारा महिला सम्मेलन का आयोजन

उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध आर्य समाज शामली में 26 मार्च को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध समाज सेवी व आर्य नेता श्री रघुवीर आर्य जी के संरक्षण में संचालित महिला आर्य समाज द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें शहर की सैकड़ों महिलाओं तथा आर्य विरांगना परिषद् की बहनों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान बहन पूनम आर्या ने कहा कि समाज निर्माण में एक महिला की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। क्योंकि प्राथमिक पाठशाला एक घर होता है और घर का संचालन एवं सन्तान की निर्माण माँ ही करती है। इसलिए आज माँ को अपनी भूमिका की गरिमा को समझने की आवश्यकता है। आर्य समाज के सिद्धान्त एवं मान्यताओं से ओत-प्रोत एक महिला ही समाज व राष्ट्र के नव-निर्माण में भूमिका निभा सकती है। इसलिए प्रथम तो आर्य समाज की विचारधारा को अपने घरों में स्थापित करो और अपनी भूमिका का निर्वहन भी पूरी निष्ठा से करें।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि आज सभी लोग नवरात्रे मना रहे हैं और कन्याओं को भोजन करवाने के लिए उन्हें ढूंढ़ते फिर रहे हैं। परन्तु जब खुद के घर में कन्या के आने की बारी आती है तो डॉक्टर को अपने घर से पैसे देकर उसे मरवाने वाले लोग भी आज समाज में हैं। वो नकली माँ की पूजा कर रहे हैं जिसे आदमी ने बनाया है परन्तु जिस माँ को स्वयं परमात्मा ने बनाया है उसको जन्म से पहले ही मार दिया जाता है। ये लोग धर्म का झूठा लबादा ओढ़े हैं। आज सच्चे आर्यों में धर्म को अपनाने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर आचार्य कल्पना के सुमधुर ईश्वर भक्ति के गीत भी हुए। संरक्षक रघुवीर सिंह, आर्य प्रधान राजपाल आर्य, मंत्री दिनेश आर्य, उपमंत्री रामेश्वर दयाल आर्य, महिला समाज की प्रधाना हेमलता आर्या, कोषाध्यक्ष मन्जू आर्या, संचालिका नीलम आर्या, विरांगना दल अध्यक्ष श्वेता आर्या, मृणाली आर्या, युवक परिषद् से वेद प्रकाश आर्य, सूर्य प्रताप (कोषाध्यक्ष) आदि उपस्थित थे।

ऋषि बोधोत्सव एवं जन्मोत्सव का भव्य आयोजन

आर्य महिला सभा के तत्वावधान में तथा अध्यक्षा माता जगदीश आर्या के संरक्षण में ऋषिबोधोत्सव एवं महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव 8 मार्च रविवार को चौक लक्ष्मणसर, बगीची खुशी राम में बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया, जिसमें सैकड़ों की संख्या में भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता स्वामी ब्रह्मवेश जी ने स्वामी दयानन्द जी के नारी जाति पर उपकारों और पूरे समाज पर किये उपकारों का वर्णन किया। श्री सुरेन्द्र सिंह जी गुलशन ने अपने भजनों द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आर्य महिला सभा द्वारा एक लाख 20 हजार रुपये की राशि, सात सिलाई मशीनें और राशन 25 गरीब परिवारों को बांटे। ज्योति प्रज्ज्वलित श्री सागर जी, सुरजीत जी, वीरेन्द्र जी, इन्द्रजीत जी, अशोक मेहता, प्रवीण जी, मुकेश पसाहन जी, अरुण और रमेश जी ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न आर्य समाजों, केन्द्रीय आर्य सभा, शक्तिनगर, पुतलीधर, मॉडल टाऊन, लक्ष्मणसर हरीपुरा, नवाकोट आदि ने भाग लिया। लंगर सेवा में विनोद मदान, मास्टर पारस का सहयोग सराहनीय रहा। इस अवसर पर 15000 रुपये, आर्य समाज रमदास 15000 रुपये आर्य समाज बरनाला, 5000 रुपये आर्य समाज नवाकोट, 5000 रुपये राजधर्म प्रकाशन को दान स्वरूप दिया गया। कार्यक्रम के अन्त में माता जी ने सबको आशीर्वाद दिया। वन्दना जी ने सबका धन्यवाद किया। ऋषि लंगर में सैकड़ों लोगों ने भोजन ग्रहण किया। व्यवस्था में वरुण, तरुण, पारस ने सहयोग दिया।

- वन्दना, संयोजिका

नौजवान समझें अपनी जिम्मेदारी - स्वामी आर्यवेश

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ (झज्जर) में हुआ युवा सम्मेलन का आयोजन

वर्तमान भारत नौजवानों का भारत है। इस समय नौजवानों की भूमिका राष्ट्र निर्माण में सबसे ज्यादा है। आज का युवा ही देश की राजनीति के साथ-साथ दशा व दिशा तय करता है। परन्तु भयंकर विडम्बना यह है कि जिस युवा को देश का भविष्य तय करना है आज उसको अपने भविष्य की दिशा भी दिखाई नहीं दे रही। जिस युवा को राष्ट्र का निर्माण करना था आज उस युवा के निर्माण की योजना ना तो किसी सरकार या राजनैतिक पार्टी के पास है और न ही किसी सामाजिक व धार्मिक संगठन के पास। इसलिए युवाओं को स्वयं ही अपनी जिम्मेदारी समझनी पड़ेगी और राष्ट्र के नव-निर्माण में स्वयं की भागीदारी सुनिश्चित करनी पड़ेगी तभी हम अपने राष्ट्र को दुनिया के सामने एक नम्बर पर ला सकते हैं। उक्त विचार सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बिरोहड़ में आयोजित हुये युवा सम्मेलन में व्यक्त किये।

स्वामी जी ने वहाँ उपस्थित प्राध्यापकों से आह्वान किया कि आपके पास वो ताकत है जो इन राष्ट्र निर्माता युवाओं को संस्कार देकर एक अच्छे नागरिक बना सकते हो। स्वामी जी ने सभी युवाओं को कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी तथा धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध लड़ने का संकल्प भी दिलवाया।

आर्य नेता पूर्व एस. डी. एम. चौ. सूबे सिंह ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। उन्होंने भागवी व बिरोहड़ की देश की आजादी में योगदान व समाज के निर्माण में लिए गए फैसलों में गांव की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने अनुशासित विद्यार्थियों की उपस्थिति पर महाविद्यालय के प्राचार्य व प्राध्यापकों को बधाई दी। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ओमपाल सिंह ने स्वामी आर्यवेश जी व अन्य अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच का संचालन प्राध्यापक अनिल ने किया। प्रो. मोर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। गाँव की ओर से मा. छत्तर सिंह आर्य ने स्वामी जी को ग्यारह सौ रुपये की राशि देकर सम्मानित किया।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

स्थापित सन् 1909

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, (सासनी) हाथरस

पत्रालय – कन्या गुरुकुल पिन–204104, जिला–हाथरस (उ. प्र.)

प्रवेश प्रारम्भ

* कक्षा शिशु से कक्षा नवम तक।
* विद्याविनोद प्रथमवर्ष (11), उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष (11)।
* विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा।
* विद्यालंकार/वेदालंकार प्रथमवर्ष, शास्त्री प्रथमवर्ष।
* आचार्य प्रथम वर्ष।
* प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक की परीक्षा।
* आई. टी. आई. (एन. सी. वी. टी.) कम्प्यूटर (कोपा) (कक्षा 10 विज्ञान विषय सहित/इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण) एवं कटिंग स्वीईंग (कक्षा 8 उत्तीर्ण) 1 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अगस्त माह में प्रवेश प्रारम्भ होंगे।
* प्रारम्भ से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी अनिवार्य। प्राचीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा।
* छात्रावास व्यवस्था

रुपये 150.00 भेजकर नियमावली मंगाये।

कन्या गुरुकुल अलीगढ़-आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।

मो.:-9458480781, 9627040399, 9258040119

- **डॉ. पवित्रा विद्यालंकार** मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 10–11 अप्रैल, 2015
प्रकाशन की तिथि : 9 अप्रैल, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
9 से 15 अप्रैल, 2015
Licencé to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17

मिलकर चलो, बोलो

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

—ऋ० १०/१९१/२

ऋषिः—संवननः।। देवता—संज्ञानम्।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—हे मनुष्यो! सदा मिलकर चलो, मिलकर आचरण करो, मिलकर बोलो और तुम्हारे मन मिलकर सदा एक निश्चय किया करें। यह दैवी नियम है। देव लोग सदा 'संजानानाः' होकर—समान मन और ज्ञानवाले होकर ही—अपने कार्य—भाग को निबाहते आये हैं। असल में यह मनों द्वारा ज्ञान की एकता ही वास्तविक एकता है। मन की एकता होने पर वचन और कर्म (आचरण) की एकता होने में कुछ देर नहीं लगती। देखो, ये देव लोग सब जगह 'संजानानाः' होकर ही कार्य कर रहे हैं। आधिदैविक जगत् में देखो, अग्नि—वायु आदि देव जगत्—संचालन के लिए इकट्ठे होकर अपने—अपने भाग को ठीक—ठीक कर रहे हैं। अध्यात्म में प्राण—इन्द्रिय आदि देवों को देखो कि ये कैसे संगठित होकर जीवन को चला रहे हैं। पैर में कांटा चुभता है तो त्वचा—प्राण—मन—हाथ आदि सब देव एक क्षण में कैसा सहयोग दिखाते हैं। आधिभौतिक जगत् में भी सब ज्ञानी=देव—पुरुष पुराने काल से लेकर आज तक संगठित होकर ही बडी—बड़ी सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। 'मिलना' दैवी प्रवृत्ति है; क्षुद्र स्वार्थों को न छोड़ सकना और न मिलना आसुरी है, अतः हे मनुष्यों! तुम मिलो, अपने सैकड़ों क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर एक बड़े समष्टि—स्वार्थ के लिए सदा मिलो। लाखों—करोड़ों के मिलकर काम करने से जो तुम्हें बड़ी भारी सामूहिक सिद्धि मिलेगी, उससे फलतः तुम लाखों—करोड़ों में से प्रत्येक व्यक्ति के भी सब सच्चे स्वार्थ अवश्य सिद्ध होंगे। मिलने में बड़ी भारी शक्ति है। तुम मिलकर चलो, मिलकर करो तो कौन—सा कार्य असाध्य है। तुम मिलकर बोलो तो संसार को हिला दो और मिलकर ध्यान करने में तो अपार—अपार शक्ति है, अतः हे मनुष्यो! मिलो, मिलो! सब प्रकार से मिलकर अपने सब अभीष्ट सिद्ध करो।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो! **संगच्छध्वम्**=मिलकर चलो, आचरण करो, **संवदध्वम्**=मिलकर बोलो, और **वः**=तुम्हारे **मनांसि**=मन **संजानताम्**=मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, समान ज्ञानवाले हों; **यथा**=जैसेकि **पूर्वे देवाः**=पहले के देव लोग **संजानानाः**=मिलकर जानते हुए, एकज्ञान होते हुए **भागम्**=भजनीय वस्तु की, अपने भाग की **उपासते**=उपासना करते, उपलब्धि करते रहे हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।